छठी शताब्दी ई.पू. में भारत की राजनैतिक दशा

आरंभिक भारतीय इतिहास में छठी शताब्दी ई.पू. को एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तनकारी काल माना जाता है। यह काल प्राय: आरंभिक राज्यों, नगरों, लोहे के बढ़ते प्रयोग और सिक्कों के विकास के साथ जुड़ा हुआ है। इसी काल में बौद्ध तथा जैन सहित विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं का विकास हुआ। इस काल तक पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा पश्चिमी बिहार में लोहे का व्यापक रूप से प्रयोग किया जाने लगा था। लौह-तकनीक और मुद्राओं के प्रयोग से भौतिक जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आया और स्थायी जीवन की प्रवृत्ति और अधिक सुदृढ़ हुई। गंगाघाटी तथा विंध्य क्षेत्र में गाँव-समूहों के स्थान पर नगरों के आर्विभाव की घटना इसी शताब्दी की देन है। वस्तुत: कृषि, उद्योग, व्यापार, वाणिज्य आदि के विकास ने प्राचीन जनजातीय व्यवस्था को जर्जर बना दिया तथा छोटे-छोटे जनों का स्थान जनपदों ने ले लिया। उत्तर वैदिक काल में राज्यों या प्रशासनिक इकाइयों के रूप में जनपदों का उल्लेख मिलता है। ग्रामीण जीवन से नागरिक जीवन की ओर खिसकाव के कारण ई.पू. छठी सदी तक आते-आते यही जनपद महाजनपदों के रूप में विकसित हो गये। वासुदेवशरण अग्रवाल ने ई.पू. 1000 से लेकर ई.पू. 500 तक के काल को जनपद-युग की संज्ञा प्रदान की है।

छठी शताब्दी ई.पू. के आरंभ में उत्तर भारत में सार्वभौम सत्ता का अभाव था और संपूर्ण प्रदेश अनेक छोटी-छोटी राजनीतिक इकाइयों में विभक्त था। इस काल की राजनीतिक दशा का स्पष्ट विवरण किसी ग्रंथ में नहीं मिलता है, किंतु बौद्ध और जैन धर्म के कुछ प्रारंभिक ग्रंथों में कुल सोलह महाजनपदों का नामोल्लेख हुआ है। इनका नामकरण अलग-अलग ग्रंथों में भिन्न-भिन्न मिलता है जिसका कारण संभवत: भिन्न-भिन्न समय पर होने वाला राजनीतिक परिवर्तन और सूची-निर्माताओं का भौगोलिक ज्ञान है। वैयाकरण पाणिनि ने 22 महाजनपदों का उल्लेख किया है, जिनमें से तीन- मगध, कोसल तथा वत्स को महत्त्वपूर्ण बताया है।

सोलह महाजनपद

भारत के सोलह महाजनपदों का उल्लेख ई.पू. छठी शताब्दी से भी पहले का है। बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय में 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है, जिससे लगता है कि बुद्ध के उदय के कुछ समय पहले समस्त उत्तरी भारत सोलह बड़े राज्यों में विभक्त था। अंगुत्तर निकाय की सूची के सोलह महाजनपदों के नाम इस प्रकार हैं- काशी, कोशल, अंग, मगध, वज्जि, मल्ल, चेदि, वत्स, कुरु, पांचाल, मत्स्य, शूरसेन, अश्मक, अवंति, गंधार और कंबोज। जनवसभसुत्त में केवल बारह राज्यों के ही नाम मिलते हैं। चुल्लनिद्देश में सोलह महाजनपदों की सूची में कलिंग को जोड़ दिया गया है तथा गंधार के स्थान पर योन का उल्लेख है। महावस्तु में गंधार और कंबोज के स्थान पर क्रमश: शिवि तथा दशार्ण का उल्लेख मिलता है। किंतु इन समस्त सूचियों में अंगुत्तरनिकाय की सूची ही प्रमाणिक मानी जाती है।

जैन ग्रंथ भगवतीसूत्र में भी महाजनपदों की एक सूची प्राप्त होती है, किंतु इस सूची में नाम कुछ भिन्न हैं, जैसे- अंग, बंग, मगह (मगध), मलय, मालव, अच्छ, वच्छ (वत्स), कोच्छ, पाढ्य, लाढ़,

राज्य था, किंतु धीरे-धीरे मगध का महत्त्व बढ़ता गया और मौर्य-साम्राज्य की स्थापना के साथ कोशल मगध-साम्राज्य कोएक अंग बन गया। इसके पश्चात् इतिहास में कोशल की जनपद के रूप में अधिक महत्ता नहीं दिखाई देती, यद्यपि साहित्य में इसका नाम गुप्तकाल तक प्रचलित रहा।

अंग

प्राचीन भारत के अंग महाजनपद में आधुनिक भागलपुर, मुंगेर और उससे लगे हुए बिहार और बंगाल के क्षेत्र सम्मिलित थे। रामायण में अंग की स्थापना का श्रेय अनंग को दिया गया है जो त्रिशूलपाणि से बचने के लिए इस क्षेत्र में भागकर स्वयं अनंग हुए थे। महाभारत तथा मत्स्य पुराण में इसकी स्थापना का श्रेय अंग नामक राजा को दिया गया है। इस महाजनपद की राजधानी चंपा नगरी, चंपा नदी के तट पर स्थित थी। उदय नारायन राय के अनुसार चंपा नामकरण का आधार चंपक वृक्षों की बहुलता थी। किंतु संभवत: चंपा नदी के तट पर स्थित होने के कारण ही उसे यह नाम मिला था। इसका सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है। महाभारत तथा पुराणों में चंपा का प्राचीन नाम 'मालिनी' प्राप्त होता है। दीघनिकाय से ज्ञात होता है कि चंपा नगर की योजना प्रसिद्ध वास्तुकार महागोविंद ने बनाई थी। प्राचीन काल में यह नगर वैभव और व्यापार-वाणिज्य का प्रमुख केंद्र था। बुद्धकाल में चंपा की गणना छ: प्रसिद्ध नगरों में की गई है। महापरिनिर्वाणसूत्र के अनुसार चंपा के अलावा पाँच अन्य महानगर राजगृह, श्रावस्ती, साकेत, कोशांबी तथा वाराणसी थे।

विधुरपंडित जातक के अनुसार राजगृह अंग राज्य का नगर था। इससे लगता है कि किसी समय मगध अंग जनपद में ही सम्मिलित था। मगध का पड़ोसी महाजनपद होने के कारण अंग तथा मगध के बीच दीर्घकाल तक आपसी प्रतिद्वंद्विता चलती रही। प्रारंभ में इस जनपद के राजा ब्रह्मदत्त ने मगध के राजा भट्टिय को पराजित कर मगध के कुछ क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया था, किंतु कालांतर में इसकी शक्ति क्षीण हो गई और यह महाजनपद मगध में मिला लिया गया।

मगध

प्राचीन भारत के सोलह महाजनपदों में मगध सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण महाजनपद था। यह महाजनपद बिहार प्रांत के पटना, गया और शाहाबाद के क्षेत्रों में फैला हुआ था। मगध महाजनपद की सीमा उत्तर में गंगा से दक्षिण में विंध्य पर्वत तक, पूर्व में चंपा और पश्चिम में सोन नदी तक विस्तृत थी। बौद्ध काल तथा परवर्ती काल में उत्तरी भारत का सबसे अधिक शक्तिशाली जनपद मगध ही था। वस्तुत: मगध प्राचीन काल से ही राजनीतिक उत्थान, पतन एवं सामाजिक-धार्मिक जागृति का केंद्र-बिंदु रहा है। मगध की प्राचीन राजधानी राजगृह (गिरिव्रज) थी, जो पाँच पहाड़ियों से घिरी थी। महाभारत में गिरिव्रज को परिवृत्त करने वाले पर्वतों में वैहार, वराह, वृषभ, ऋषिगिरि तथा चैत्यक नाम मिलता है।

जैन साहित्य प्रज्ञापणसूत्र में अनेक स्थलों पर मगध तथा उसकी राजधानी राजगृह (प्राकृत-रायगिह) का उल्लेख है। रामायण में इसकी स्थापना का श्रेय ब्रह्मा के पुत्र वसु को दिया गया है और इसी आधार पर इसे वसुमती कहा गया है। पौराणिक वर्णनों से पता चलता है कि इसकी स्थापना कुशाग्र ने की थी। मगध तथा अंग पड़ोसी राज्य थे और चंपा नदी इन दोनों के बीच विभाजक रेखा थी।

मगध का सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है। इससे सूचित होता है कि प्राय: उत्तर वैदिक काल तक मगध आर्य सभ्यता के प्रभाव क्षेत्र के बाहर था। अभिधान चिंतामणि में मगध को 'कीकट'

पुष्टि पाँचवीं शताब्दी में भारत आनेवाले चीनी यात्री फाह्यान के यात्रा विवरण से भी होती है। ब्राह्मण, जैन तथा बौद्ध साहित्य में काशी का उल्लेख मिलता है। वायु, ब्रह्मांड, मत्स्य, मारकंडेय तथा पद्म पुराणों में काशी की गणना मध्यदेशीय जनपदों में की गई है। पुराणों के अनुसार काशी को बसानेवाले पुरुरवा के वंशज राजा 'काश' थे, इसलिए उनके वंशज 'काशि' कहलाये। संभवतः यही कारण है कि इस जनपद का नाम 'काशी' पड़ गया। कहते हैं कि काशी भगवान् शंकर के त्रिशूल पर स्थित है, इसलिए इसे पृथ्वी से बाहर का क्षेत्र माना जाता है। मान्यता है कि प्रलय के समय संपूर्ण पृथ्वी का विनाश हो जाने पर भी शंकर के त्रिशूल पर स्थित होने के कारण काशी नगरी सुरक्षित रहती है। जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ के पिता अश्वसेन यहाँ के प्रसिद्ध राजाओं में से एक थे। सोननंदजातक से ज्ञात होता है कि इस राज्य का विस्तार तीन सौ ली था और यह महान्, समृद्धशाली तथा साधन संपन्न राज्य था। बौद्ध ग्रंथों से पता चलता है कि काशी तथा कोशल के बीच लम्बे समय तक संघर्ष चला और एक समय काशी के राजा ब्रह्मदत्त ने कोशल को जीत लिया था। किंतु अंत में कोशल नरेश कंस ने काशी को जीत कर अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया। वाराणसी का महत्त्व नदी तट पर स्थित होने तथा उत्पादनों के कारण भी था। हेमचंद्र रायचौधरी ने वाराणसी की तुलना प्राचीन बेबीलोन तथा मध्यकालीन रोम से किया है।

कोशल

अंगुत्तरनिकाय के अनुसार बुद्धकाल से पहले कोशल की गणना उत्तर भारत के प्रमुख महाजनपदों में होती थी जिसकी राजधानी अयोध्या व साकेत थी। यह जनपद सरयू (गंगा नदी की सहायक नदी) के तटवर्ती प्रदेश में बसा हुआ था जिसमें उत्तर प्रदेश के फैजाबाद, अंबेडकरनगर, गोंडा, बहराइच एवं जौनपुर के कुछ क्षेत्र शामिल थे। उत्तर में नेपाल से लेकर दक्षिण में सई नदी (स्यंदिका) तथा पश्चिम में पांचाल से लेकर पूरब में गंडक नदी तक यह महाजनपद प्रसरित था। पालि ग्रंथों में इसे 'सुंदरिका' नाम से उल्लिखित किया गया है। इसके दक्षिण-पूर्व काशी जनपद विद्यमान था। अयोध्या, साकेत और श्रावस्ती इस महाजनपद के मुख्य नगर थे। अयोध्या को कोशल की प्राचीनतम् राजधानी होने का श्रेय प्राप्त है। सरयू के किनारे बसी हुई एक बस्ती का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है, जो कालांतर में अयोध्या के रूप में विकसित हो गई। साकेत इसकी दूसरी राजधानी थी। बुद्धकालीन छः महानगरों में साकेत भी एक था। ब्राह्मण तथा जैन ग्रंथों में अयोध्या तथा साकेत का तादात्म्य कर दिया गया है, किंतु बौद्ध ग्रंथों में दोनों को अलग-अलग बताया गया है। रिज डेविड्स के अनुसार अयोध्या और साकेत दोनों एक ही नगर के दो भाग थे।

ई.पू. छठी शताब्दी में कोशल की राजधानी श्रावस्ती में थी जिसके भग्नावशेष गोंडा के समीप सहेत-महेत से पाये गये हैं। बुद्ध के समय में श्रावस्ती की गणना भी छः महानगरों में की जाती थी। जातकों में कोशल के एक अन्य नगर सेतव्या का भी उल्लेख है। इस समय विदेह और कोसल की सीमा पर सदानीरा (गंडक) नदी बहती थी। महावग्ग जातक में काशिराज ब्रह्मदत्त द्वारा कोशल पर आक्रमण की चर्चा मिलती है। लगता है कि ब्रह्मदत्त के समय में कोशल की स्थिति अच्छी नहीं थी, किंतु कालांतर में इसकी शक्ति बढ़ी और इसने काशी पर अधिकार कर लिया। इसका श्रेय कोशल नरेश कंस को दिया जाता है। बुद्ध के पूर्व कोशल का शासक महाकोशल था। उसने अपनी पुत्री महाकोशला या कोशलदेवी का विवाह मगध-नरेश बिंबिसार के साथ किया था। काशी का राज्य, जो इस समय कोशल के अंतर्गत था, राजकुमारी को दहेज में उसकी प्रसाधन-सामग्री के व्यय के लिए दिया गया था। बुद्ध का समकालीन कोशल का राजा प्रसेनजित् था। छठी और पाँचवी शती ई.पू. में कोशल मगध के समान ही शक्तिशाली